जालंधर ब्रीज

• JALANDHAR BREEZE • WEEKLY • YEAR-1 • 20 MARCH TO 26 MARCH 2020 • VOLUME-28 • PAGES- 4 • RATE- 3/- • www.jalandharbreeze.com • RNI NO.:PUNHIN/2019/77863

अनमोल विचार

भाषाओं का अनुवाद हो सकता है... भावनाओं का नहीं इन्हें समझना पड़ता है

इस सप्ताह का विचार

कोई विश्वास तोड़े तो दिल से उसका धन्यवाद करो क्योंकि वहीं लोग सिखाते है कि विश्वास सोच समझ कर करो

पूर्व निकाय मंत्री लगता 2022 चुनाव लड़ने के मूड में नहीं है

नैशनल हाईवे विभाग की खमियां को लेकर क्यों चुप्पी साधे हुए पूर्व निकाय मंत्री

■ **जालंधर से विजय कुमार की विशेष रिपोर्ट**

पंजाब भाजपा में रहे भाजपा के तेज तर्रार नेता जो पूर्व निकाय मंत्री भी रहे जालंधर की राजनीति में सरगर्म नहीं दिख रहे हैं यह लोगों द्वारा दबी जुबान में प्रतिक्रिया दी जा रही है जालंधर ब्रीज द्वारा नैशनल हाईवे के अधिकारियों द्वारा की गई त्रुटियों की आवाज को काफी अंकों में समाचार पत्र के माध्यम से बुलंद करने की कोशिश की गई और हमारे द्वारा भविष्य में भी किया जाएगा परन्तु हैरानी की बात देखने में यह मिल रही है कि केन्द्र में भाजपा की सरकार है और नैशनल हाईवे विभाग केन्द्र के अधीन आता है पिछले लगभग एक साल से जालंधर के लोग मुख्यत: पी.ए.पी-रामामंडी फ्लाई ओवर से परेशान चल रहे हैं और जालंधर के जिलाधीश द्वारा इस परेशानी को दूर करने के लिए कड़े कदम उठाकर अपने कर्त्तव्य को पूरे करने की कोशिश की जा रही है ताकि लोगों के मन में इन त्रुटियों में उनकी शामूलियत ना लगे।

एक भाजपा के तेज तर्रार नेता का इस गंभीर मुद्दे पर मौन धारे रखना कई प्रयासों को बढ़ावा देने का काम कर रहा है कि पिछले दो दशकों से इसी विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ते रहे और जीतने के बाद मंत्री भी बने पर इतनी गंभीर समस्या से झूझ रहे लोगों के लिए केन्द्र में जाकर अपनी सरकार से और जिलाधीश के बीच कोई तालमेल क्यों नहीं बिठाया गया और किसी उच्च अधिकारी के दौरे में अपनी शामूलियत क्यों नहीं दिखाई गई परन्तु भाजपा के कुछ कार्यकर्त्ता द्वारा इस विधानसभा से किसी और के चुनाव लड़ने के प्रयासों को भी बढ़ावा दिया जा रहा है पंरतु यह तो भाजपा का आंतरिक मामला है।

हमारा समाचार पत्र कुंभकर्णा नींद सोये हुए नेताओं और अफसरों को जगाने के लिए वचनबद्ध है।

कोरोना वायरस के चलते रेलवे ने 31 मार्च तक 84 और ट्रेनों को किया रद्द

■ **नई दिल्ली/न्यूज नेटवर्क**

रेलवे ने कोरोना वायरस के खतरे और यात्रियों की कम संख्या के कारण बृहस्पतिवार को 84 और ट्रेनों को रद्द कर दिया जो 20 से 31 मार्च के बीच नहीं चलेंगी। अधिकारियों ने बताया कि इसके साथ ही रद्द ट्रेनों की कुल संख्या 155 पर पहुंच गई है। रेलवे अधिकारियों ने बताया कि जिन ट्रेनों को रद्द किया जाना था उनकी पहचान कल रात कर ली गई और यह फैसला 20 मार्च से 31 मार्च तक लागू रहेगा। एक अधिकारी ने बताया, ''इन 155 ट्रेनों में टिकट कराने वाले सभी यात्रियों को व्यक्तिगत रूप से इसके बारे में सूचित किया जा रहा है। इन ट्रेनों के लिए टिकट रद्द करने पर लगने वाला शुल्क नहीं वसूला जाएगा।

यात्रियों को 100 प्रतिशत किराया वापस मिलेगा।'' राष्ट्रीय परिवाहक ने अपने कैटरिंग कर्मचारियों के लिए जोनल मुख्यालयों को दिशा निर्देश भी जारी किए थे जिसमें कहा गया कि बुखार, खांसी, जुकाम या सांस लेने में मुश्किल होने की शिकायत करने वाले किसी भी कर्मचारी को भारतीय रेलवे में भोजन बनाने से जुड़े किसी भी काम में तैनात न किया जाए। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, भारत में बृहस्पतिवार को कोरोना वायरस के मामले बढ़कर 169 हो गए। देश के विभिन्न हिस्सों से 18 नए मामले सामने आए।

निर्भया केस: नहीं चला दोषी पवन का आखिरी दांव, क्यूरेटिव याचिका सुप्रीमकोर्ट में खारिज

■ **नई दिल्ली/न्यूज नेटवर्क**

उच्चतम न्यायालय ने निर्भया मामले के दोषी पवन गुप्ता की उस सुधारात्मक याचिका को गुरुवार को खारिज कर दिया, जिसमें उसने 2012 में हुए इस अपराध के समय नाबालिग होने का दावा किया था। न्यायमूर्ति एन.वी. रमण के नेतृत्व में छह न्यायाधीशों की एक पीठ ने उसकी याचिका खारिज करते हुए कहा कि यह कोई मामला नहीं बनता। पीठ ने कहा, '' मौखिक सुनवाई का अनुरोध खारिज किया जाता है। हमने सुधारात्मक याचिका और संबंधित दस्तावेजों पर गौर किया। हमारे अनुसार यह कोई मामला नहीं बनता... इसलिए हम सुधारात्मक याचिका को खारिज करते हैं।'' पीठ में न्यायमूर्ति अरुण मिश्रा, न्यायमूर्ति आर. एफ. नरीमन, न्यायमूर्ति आर. भानुमति, न्यायमूर्ति अशोक भूषण और न्यायमूर्ति आर. एस. बोपन्ना भी शामिल थे। गौरतलब है कि पांच मार्च को एक निचली अदालत ने मुकेश सिंह (32), पवन गुप्ता (25), विनय शर्मा (26) और अक्षय कुमार सिंह (31) को फांसी देने के लिए नया मृत्यु वारंट जारी किया था। चारों दोषियों को 20 मार्च सुबह साढ़े पांच बजे फांसी दी जाएगी। सभी दोषी अपने सभी कानूनी और संवैधानिक विकल्पों का इस्तेमाल कर चुके है और उनके बचने के लगभग सभी रास्ते बंद हो चुके हैं।

लंच पर भी पड़ा कोरोना का असर, मुंबई में डब्बावालों ने 31 तक निलंबित की सेवाए

■ **मुंबई/न्यूज नेटवर्क**

मुम्बई के मशहूर टिफिन डिलीवरी वाले डब्बावालों ने गुरुवार को कहा कि कोरोना वायरस के मद्देनजर वह 31 मार्च तक अपनी सेवाएं निलंबित कर रहे हैं। मुम्बई डब्बावाला संघ के प्रवक्ता सुभाष तालेकर ने बताया कि सेवाएं एहतियाती तौर पर शुक्रवार से निलंबित रहेंगी। तालेकर ने कहा कि मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने लोगों से ट्रेनों और बसों में बेवजह यात्रा ना करने की अपील की थी, जिसको ध्यान में रखते हुए संघ ने टिफिन डिलीवरी सेवाएं निलंबित करने का फैसला किया।

क्या आम नागरिक ही दोषी है ?

■ **जालंधर/विजय कुमार**

आए दिन सरकार सरकारी कर्मचारियों की सुरक्षा और सुविधा के लिए कानून बना रही है अगर अस्पताल में जाते हैं वहाँ का चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी से लेकर नर्स डाक्टर या अन्य कलैरिक स्टाफ आप से अभद्र व्यवहार करे, हाथापाई करे तो आपको उस कर्मचारी या अधिकारी का विरोध नहीं करना अगर आप उसका विरोध करेंगे तो आप पर 10 लाख जुर्माना से लेकर दस वर्ष तक का कारावास हो सकता है ऐसा प्रावधान किया गया है।

आप आम नागरिक है और आपके लिए भी नियम है कि आप उस समय मोहनदास कर्मचन्द गाँधी का अहिंसा परमों धर्मा वाले नियम का पालन करें अगर आपके बाये गाल पर चाँटा पड़े तो आप दाँया गाल आगे कर दें और मान लें कि मेरा देश महान है ऐसा विचार है भारत सरकार का। आज से वर्षों पूर्व अस्पताल भी थे और बीमार भी थे परन्तु कोई आवश्यकता नहीं पड़ी ऐसे नियमों की क्योंकि तब गुर्दें नहीं बिकते थे तब दवाईयां नहीं बिकती थी तब डाक्टर अपनी मर्यादा और कर्त्तव्य को निभाते थे और आम जन भी उनका सम्मान भगवान के सामान किया करते थे परन्तु आज ऐसा नहीं है सरकार को यह नहीं भूलना चाहिए कि डाक्टर और रोगी (आम नागरिक)के वोट की कीमत सामान हैं। डाक्टर का एक वोट एक ही माना जाता है दस नहीं। भ्रष्ट नेताओं से उच्च सम्पर्क रखने वाले डाक्टरों द्वारा धड़ल्ले से फीसे दवाओं की कीमतें और मंहगे टैस्टों और अस्पतालों पर किये गये खर्चों की दस गुना कीमत वसूली जाती है आम नागरिक से अमानवीय व्यवहार किया जाता है वह सरकार को दिखाई नहीं देता।

मंहगो टैस्टों और अस्पतालों पर किये गये खर्चों की दस गुना कीमत वसूली जाती है आम नागरिक से अमानवीय व्यवहार किया जाता है वह सरकार को दिखाई नहीं देता

क्या अगर सरकारें आपना कर्त्तव्य पूरा नहीं कर पा रही आम जन को स्वास्थ्य सुविधा उसकी आवश्यकता अनुरूप नहीं दे पा रही तो क्या सरकार के विरुद्ध कुछ भी कहने या करने को बाध्य है आम नागरिक सरकार को चेतना होगा यही समयोचित कदम लेना होगा। ऐसे कड़े नियम नहीं चल पायेंगे यह प्रजातंत्र है तानाशाही नहीं। आप इटली से आए गाँधी परिवार की करोना जाँच नहीं करवा सकते वरना ससंद ठप्प कर दी जाती है क्या यह समानता का अधिकार है।

बढ़ सकता है कोरोना वायरस का प्रकोप, सिर्फ न्यूयॉर्क में 10000 मरीजों की आशंका

■ **न्यूयार्क/न्यूज नेटवर्क**

न्यूयार्क के गवर्नर बिल डे ब्लासियो ने आगाह किया है कि न्यूयार्क शहर में कोविड-19 के मामले में बहुत जल्द खासा इजाफा होगा और वह 10,000 का आंकड़ा पार कर सकता है। उन्होंने संघीय सरकार से

कोरोना वायरस के संक्रमण की रफ्तार धीमी करने के लिए ''तत्काल हस्तक्षेप'' का आह्वान किया। अमेरिका में कोरोना वायरस के कम से कम 8,736 मामले दर्ज किए गए हैं और अब तक इससे 149 लोगों की मौत हो चुकी है।

न्यूयार्क इस महामारी से सबसे ज्यादा प्रभावित है। यहां कोविड-19 के 2900 से ज्यादा मामले दर्ज किए गए हैं जबकि 21 लोगों की मौत हो चुकी है। शहर में महज एक दिन में 1000 लोग संक्रमित हुए हैं।

कोरोना वायरस के कारण दुनिया भर में खत्म हो सकती हैं इतनी नौकरियां

■ **संयुक्त राष्ट्र/न्यूज नेटवर्क**

संयुक्त राष्ट्र की एक एजेंसी के अनुसार कोरोना वायरस महामारी के कारण दुनिया भर में लगभग 2.5 करोड़ नौकरियां खत्म हो सकती हैं, लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समन्वित नीतिगत कार्रवाई के जरिए वैश्विक बेरोजगारी पर कोरोना वायरस के प्रभाव को कम करने में मदद कर सकती है।

अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) ने कोविड-19 और कामकाजी दुनिया: प्रभाव और कार्रवाई शीर्षक वाली अपनी प्रारंभिक मूल्यांकन रिपोर्ट में कार्यस्थल में श्रमिकों की सुरक्षा, अर्थव्यवस्था को मदद और रोजगार तथा आमदनी को बनाए रखने के लिए तत्काल, बड़े पैमाने पर और समन्वित उपायों का आह्वान किया है।

आईएलओ ने कहा कि इन उपायों में सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना, रोजगार बनाए रखने में सहायता (यानी कम अवधि का काम,वैतनिक अवकाश, अन्य सब्सिडी) और छोटे तथा मझोले उद्योगों के लिए वित्तीय और कर राहत शामिल हैं।

आईएलओ ने कहा कि कोरोना वायरस महामारी के चलते पैदा हुए आर्थिक और श्रम संकट से दुनिया भर में करीब 2.5 करोड़ लोग बेरोजगार हो सकते हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि हालांकि जैसा 2008 के संकट में देखा गया था, अगर हम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समन्वित नीतिगत कार्रवाई पर गंभीरता से अमल करें तो वैश्विक बेरोजगारी पर प्रभाव काफी कम हो सकता है।

कोरोना वायरस: रिसर्च में चौंकाने वाला दावा, A ब्लड ग्रुप के लोगों को है ज्यादा खतरा

■ **नई दिल्ली/न्यूज नेटवर्क**

कोरोना वायरस का कहर बढ़ता ही जा रहा है. दुनिया में अब तक इस वायरस की वजह से लगभग आठ हजार लोगों की मौत हो चुकी है। वहीं भारत में भी कोरोना ने अपने पैर पसार लिए हैं। भारत में कोरोना वायरस के 137 मामले सामने आ चुके हैं। भारत में इस वायरस की वजह से 3 लोगों की मौत हो चुकी है। वहीं एक रिसर्च में सामने आया है कि A ब्लडग्रुप के लोगों को कोरोना वायरस से ज्यादा खतरा है। चीन की एक रिसर्च में पाया गया है कि A ब्लडग्रुप वाले लोगों को कोरोना वायरस से ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत है। वहीं जिनका O ब्लडग्रुप है वह कोरोना वायरस के प्रतिरोधी हो सकते हैं। कोरोना वायरस को लेकर ये रिसर्च चीन के वुहान और शेन्जेन शहर में किया गया, जिसमें पाया गया कि मरने वाले लोगों में जिन लोगों का A ब्लडग्रुप था उनकी संख्या ज्यादा है। साथ ही A ब्लडग्रुप के लोग की इस वायरस से ज्यादा संक्रमित हैं। रिसर्च में पाया गया कि जिन लोगों का O ब्लडग्रुप है उन लोगों की संख्या मरने वाले लोगों में कम है। रिसर्च में पाया गया कि A ब्लडग्रुप के 38 फीसदी लोगो कोरोना से संक्रमित हैं। वहीं O ब्लडग्रुप के 26 फीसदी लोग ही इस से संक्रमित हैं। वुहान से कुछ दूर स्थित सेंटर फॉर एविडेंस-बेस्ड एंड ट्रांसलेशनल मेडिसिन में ये रिसर्च किया जा रहा है. रिसर्च में वायरस से मरने वाले 206 रोगियों की भी जांच की गई। जिनमें 85 पीड़ितों या 41.26 प्रतिशत लोगों का A ब्लडग्रुप था। वहीं सिर्फ 52 लोगों का O ब्लडग्रुप था। बता दें कि दुनिया में लगभग दो लाख कोरोना वायरस के मामले सामने आ चुके हैं।

उक्ति

जो व्यक्ति जिम्मेदारियों से भागता है, वह अपनी विश्वसनीयता खो देता है। जमाना तो उसी पर भरोसा करता है, जो अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में कोताही नहीं बरतता।

■ अब्राहम लिंकन

www.jalandharbreeze.com

साप्ताहिक
20 से 26 मार्च 2020
जालंधर ब्रीज

दखल

विनाश से बचने के विकल्प हैं गांधी

महात्मा गांधी के विचार वैश्विक समस्याओं से निदान का रास्ता बताते हैं। भारत का दुर्भाग्य यह रहा कि सामाजिक सद्भाव और पंथिक समरसता का जो मंत्र गांधी देश को सिखा गए थे, उसे स्वतंत्रता के बाद की राजनीति ने पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया। यदि गांधी के प्रति राष्ट्र का सम्मान वास्तविक और व्यावहारिक होता, तो क्या फरवरी 2020 के अंतिम सप्ताह में 36 घंटे तक दिल्ली में हुई हत्याएं, लूट, हिंसा संभव थी?

वर्ष 1996 में यूनेस्को के तत्वावधान में आयोजित एक सम्मलेन में विश्व के समक्ष उपस्थित समस्याओं पर गहन विचार-विमर्श में यह उभरा कि मूल रूप से हर देश प्रगति और विकास की सही अवधारणा की खोज से जूझ रहा है। ऐसा भी कोई देश नहीं है जिसके सामने आर्थिक संकट समस्या बन कर न उपस्थित हो। इसी प्रकार हर देश 'किसी न किसी प्रकार के नैतिक संकट' से भी ग्रस्त है। पिछले 25 वर्षों में बहुत कुछ बदल गया है। वैश्विक समस्याओं का निर्धारण व उनके समाधान की प्राथमिकताएं अलग-अलग ढंग से देखी और समझी जा सकती हैं, मगर ऊपर लिखे तीनों पक्ष कहीं भी सुलझ गए हों, ऐसा उदाहरण शायद ही मिल सके। आज के संदर्भ में जलवायु परिवर्तन और उससे जुड़े अनेक पक्ष समस्या बन कर उभरते हैं, जल और वायु की अलग-अलग स्थितियां भी विकट होती जा रही हैं। मनुष्य और प्रकृति के संबंध लगातार छिन्न-भिन्न होते जा रहे हैं, सुधारने के उपाय अपर्याप्त हैं, विकसित देश सहयोग करने में आनाकानी करा रहे हैं। इसके साथ ही हिंसा, युद्ध, आतंक, असुरक्षा, अविश्वास करोड़ों लोगों को प्रभावित कर रहे हैं। मनुष्य और प्रकृति के आपसी संबंध तहस-नहस हो चुके हैं। हर चर्चा में समस्याओं की सूची बढ़ती जाती है। यह भी हमारे समक्ष स्पष्ट है कि 21वीं सदी के दो दशक पूरे हो रहे हैं, मगर भौतिकवाद की दौड़ में कोई कमी नहीं आई है, परिणामस्वरूप अनेक देश हिंसा और हथियारों के जखीरे को प्रगति और विकास का पर्याय मानते हुए उसी को बढ़ाने में लगे हैं।

इस समय विश्व में सामजिक सरोकार भी अप्रत्याशित गति से बदल रहे हैं। यूरोप के अनेक देश जो एक जाति, धर्म और भाषा से सदियों से परिचित रहे, आज बड़े बदलावों को संभालाने के प्रयासों में लगे हैं। जनसंख्या, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भाषा, रंग व धर्म इत्यादि सभी के अनुपात तेजी से बदल रहे हैं। जहां विविधता की स्वीकार्यता का अनुभव नहीं है, वहां अविश्वास, आशंका और हिंसा लगातार बढ़ रहे हैं। अपेक्षा तो यह थी कि अपने हजारों साल के 'हर प्रकार की विविधता की व्यावहारिक स्वीकार्यता' के अनुभव के आधार पर भारत वैश्विक परिवर्तन में असमंजस के इस कठिन दौर में विश्व को रास्ता दिखाएगा। इस अपेक्षा को अनेक प्रबुद्ध जन बहुत पहले से ही विश्व के सम्मुख रखते आ रहे हैं। भारत की इस संस्कृति को गहराई तक समझने वाले डा. अर्नाल्ड टायनबी ने उसके महत्व को इन शब्दों में वर्णित किया था-'यह भली भांति स्पष्ट हो रहा है कि एक अध्याय जिसकी शुरुआत पाश्चात्य थी, उसका समापन भारतीय होगा। मानव इतिहास के इस सबसे अधिक खतरनाक क्षण में मानव जाति की मुक्ति का यदि कोई रास्ता है तो वह भारतीय है-चक्रवर्ती अशोक और महात्मा गांधी का अहिंसा के सिद्धांत और रामकृष्ण परमहंस के धार्मिक सहिष्णुता के उपदेश ही मानव जाति को बचा सकते हैं।

यहां हमारे पास एक ऐसी मनोवृत्ति व भावना है जो मानव जाति के लिए एक परिवार के रूप में विकसित होने में सहायक हो सकती है और इस अणुयुद्ध में विनाश का यही विकल्प है।' महात्मा गांधी के विश्व पटल पर उभरने के बाद इस सोच को सारी दुनिया में सराहना तो मिली, मगर उसे अपनाने का साहस मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला जैसे लोग ही कर सके। भारत की संस्कृति में जो सर्वश्रेष्ठ था, अद्वितीय था, उसे गांधी ने पहचाना, परखा और रोजमर्रा के जीवन में व्यवहार में अंतर्निहित किया। उन्होंने लोगों को एकजुट होकर राष्ट्रीय संघर्ष में सब कुछ भूल कर केवल भारतीय होकर शामिल होने का सफल आह्वान किया था। भारत का दुर्भाग्य है कि सामाजिक सद्भाव और पंथिक समरसता का जो मंत्र गांधी देश को सिखा गए थे, उसे स्वतंत्रता के बाद की राजनीति ने पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया। यदि गांधी के प्रति राष्ट्र का सम्मान वास्तविक और व्यावहारिक होता, तो क्या फरवरी 2020 के अंतिम सप्ताह में 36 घंटे तक दिल्ली में हुई हत्याएं, लूट, हिंसा संभव थी? इसके कारण तो संचार माध्यमों द्वारा चर्चित होते रहेंगे, राजनेता अपने-अपने दलगत स्वार्थों से आगे नहीं बढ़ेंगे और सार-तत्व आरोपों और प्रत्यारोपों में खो जाएगा। जब तक भारत का संपूर्ण समाज और राजनीति से अनछुए प्रबुद्ध जन आगे नहीं आएंगे, तब तक देश अपने सही रास्ते, अपनी क्षमता और वैश्विक उत्तरदायित्व को नहीं पहचान पाएगा। इसका खमियाजा सारे विश्व को उठाना पड़ेगा।

भारत क्या अपने उस राष्ट्रपिता के सिद्धांतों को अनदेखा कर सकता है, जिसके देहांत पर फ्रांस के मशहूर सोशलिस्ट नेता लीओन ब्लूम ने कहा था- 'न मैंने उन्हें देखा है, न उनके देश गया हूं, न उनकी भाषा जानता हूं, लेकिन मुझे लग रहा कि मेरा निकट का परिवारजन ही बिछुड़ गया है। सारा विश्व दुख में डूब गया है।' आइंस्टीन ने लिखा था कि गांधी जैसी वैविक स्वीकार्यता, जन-प्रेम और श्रद्धा केवल उच्चतम स्तर के नैतिक आचरण द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। क्या भारत के हर बच्चे को अपने संवेदनशील वर्षों में ही इस प्रकार के तथ्यों को नहीं जानना चाहिए? विचारणीय है कि हमने शिक्षा में नैतिकता और चरित्र निर्माण को उचित स्थान क्यों नहीं दिया। आज विश्व में विकसित देश ही नहीं, गरीबी, भुखमरी व अशिक्षा से जूझ रहे देश भी नए-नए हथियार खरीदने पर क्षमता से अधिक खर्च कर रहे हैं, परमाणु हथियारों से अपनी संपन्नता को गवर्पूण ढंग से प्रचारित करते हैं। इनके सामने गांधी के विचारों, मूल्यों और सिद्धांतों को तो वही रख सकता है जो उनका कम से कम आंशिक रूप से पालन कर रहा हो। ऐसी अपेक्षा तो भारत से ही की जा सकती है और लोग कर भी रहे हैं, मगर हम स्वयं अपना घर ही नहीं संभाल पा रहे हैं तो किसी और को कैसे राह दिखा सकते हैं? सामान्यतः निरस्त्रीकरण की कोई संभावना आज के वातावरण में नजर नहीं आती है।

अर्नाल्ड टायनबी सम्माननीय विद्वान, अध्ययनकर्ता, दार्शनिक और नव-ज्ञान के सर्जक के रूप में जाने जाते रहे। उन्होंने गांधी के रास्ते को मानवता के बचाने का विकल्प माना और ऐसा मानने वाले वे अकेले नहीं थे। गांधी के प्रभाव का विस्तार कितना वृहद् और विस्तृत था, इसका अनुमान आज भी लोगों को आश्चर्य में डाल देता है। जनरल डगलस मकार्थर मित्र-राष्ट्रों की उन सेनाओं के सर्वोच्च सेनानायक थे, जिन्होंने जापान पर कब्जा किया था। उनका सारा जीवन हिंसा को समझने, उसका उपयोग कर दूसरों द्वारा की जा रही हिंसा को शांत करने, यानी युद्ध में विजय प्राप्त करने में ही लगा रहा। वे युद्धक हथियारों की उपयोगिता और उपयोग के उच्चतम स्तर के विशेषज्ञ माने जाते थे। गांधी के सिद्धांतों के प्रति उनके उद्गारों को कुछ इस तरह समझा जा सकता है- 'सभ्यता के विकास में और यदि उसे जारी रहना है, यह समझना आवश्यक है कि सभी मनुष्यों द्वारा गांधी के इस विश्वास को स्वीकार करना ही होगा कि बल प्रयोग द्वारा विवादों का सुलझाया जाना न केवल गलत है, बल्कि उसमें मानव जाति के लिए आत्मघाती तत्व निहित हैं।'

अनगिनत संदर्भों का हवाला दिया जा सकता है। रास्ता तो ज्ञात है, मगर उस पर चल सकने की रणनीति निर्धारित करना उतना ही कठिन है, जितना कि किसी भी देश को आज अपनी विकास की अवधारण निश्चित कर पाना। उचित और उपयोगी मार्ग तो ज्ञान, विवेक और नैतिकता के पथ पर चल कर ही ढूंढा जा सकता है।

■ जगमोहन सिंह राजपूत
(वरिष्ठ पत्रकार)

विचार

बस्ते के वजन पर चिंता सही

दुनियाभर के वैज्ञानिकों ने बच्चों के लगातार भारी होते बस्ते को लेकर चिंता जताते हुए कहा है कि बैग का वजन बच्चों के शरीर के वजन का 10 फीसदी होना चाहिए। देश में भी पहले कई बार बस्ते के वजन को लेकर कवायद हो चुकी है, पर बदलाव नहीं दिखा है।

नया शिक्षा सत्र शुरू होने की कवायद दिखने लगी है। इसी के साथ बच्चों के बस्ते का वजन भी चर्चा में आ गया है। दुनिया भर के वैज्ञानिकों ने बच्चों के लगातार भारी होते बस्ते को लेकर यह कहा है कि बैग का वजन बच्चों के शरीर के वजन का 10 फीसदी होना चाहिए। साथ ही जो बच्चे ट्रॉली बैग का इस्तेमाल करते हैं, उनके लिए वजन की सीमा 20 फीसदी से ज्यादा नहीं होना चाहिए। स्कूल बैग के वजन को लेकर सरकारी स्तर पर भी कवायद होती दिखी है, मगर पिछले सत्र तक यह व्यवस्था परवान नहीं चढ़ पाई। अब नए सत्र में इस दिशा में बदलाव होगा, यह देखना दिलचस्प होगा। केंद्र सरकार द्वारा जारी दिशा-निर्देशों में पहली से 12वीं तक की पढ़ाई करने वाले बच्चों के बस्ते का बोझ सीमित किया गया है। प्रत्येक कक्षा और बच्चे की उम्र के हिसाब से बस्ते का वजन निर्धारित हुआ है। छोटी कक्षाओं में पढ़ने वाले बच्चों की पीठ पर उनकी उम्र व शरीर के वजन से भी ज्यादा बस्ते का वजन होता है। इस वजन को ढोते ढोते बच्चे पढ़ाई से उब जाते हैं। सरकार द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार कक्षा पहली-दूसरी में पढ़ने वाले बच्चों के बस्ते का वजन डेढ़ किलोग्राम निर्धारित किया गया है, जबकि तीसरी से पांचवीं तक पढ़ने वाले बच्चों के बस्ते का वजन दो से तीन किलोग्राम होगा।

इसी तरह कक्षा छठी से आठवीं तक पढ़ाई करने वाले बच्चों के बस्ते का वजन चार किलोग्राम से अधिक नहीं होगा। कक्षा आठवीं से नौंवी तक बस्ते का वजन साढ़े चार किलोग्राम रखा गया है। कक्षा दसवीं से बारहवीं तक में पढ़ने वाले बच्चों के बस्ते का वजन पांच किलोग्राम से अधिक नहीं होगा। शिक्षा व्यवस्था पर किए गए अध्ययन यह बताते हैं कि स्कूली बच्चों में पढ़ाई-लिखाई के प्रति अरुचि या उसे बोझ की तरह लेने का एक बड़ा कारण उनके कंधों पर जरूरत से ज्यादा भारी बस्ते का टंगा होना है। इसलिए अनेक शिक्षाविद लंबे समय से यह सुझाव देते रहे हैं कि स्कूली बच्चों पर किताबों के बोझ को कम किया जाना चाहिए। सरकारों की ओर से कई बार इस दिशा में कदम उठाने की बातें कही गईं। यों दिल्ली में पहली और दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों को होमवर्क नहीं दिया जाता है।

दरअसल, इस तरह की पहलकदमी की जरूरत काफी पहले से महसूस की जा रही थी। निश्चित रूप से बच्चों के कंधे पर यह बोझ कक्षा की किताबों और कॉपियों का होता है, लेकिन उसके भार तले उनका शरीर और मन-मस्तिष्क दबा होता है। बहुत सारे बच्चे शिक्षा को अपनी जीवन-चर्या का सहज हिस्सा न मान कर, उसे एक जबरन निबाहने वाली ड्यूटी के तौर पर देखते हैं। शुरुआती कक्षाओं में दाखिला लेने वाले बच्चों की उम्र कई बार काफी कम होती है और उन्हें भी न केवल कक्षाएं पूरी करनी पड़ती हैं, बल्कि घर में पढ़ाई पर समय देना पड़ता है। बिना दिलचस्पी के की जाने वाली पढ़ाई का ही नतीजा यह होता है कि ज्यादातर बच्चों को किताबों में से कोई नई चीज सीखने के लिए अपेक्षया ज्यादा वक्त लगाना पड़ता है।

खतरे में पड़ती जैव विविधता

विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी और वनस्पति एक-दूसरे की जरूरतों को पूरा करते हैं। इनका जीवन एक-दूसरे पर ही निर्भर रहता है। सही मायनों में जैव विविधता की समृद्धि ही धरती को रहने और जीवन यापन के योग्य बनाती है। लेकिन विडंबना है कि बढ़ते प्रदूषण से जीव-जंतुओं और वनस्पतियों की अनेक प्रजातियों के समक्ष अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया है। अगर भारत में कुछ जीव-जंतुओं की प्रजातियों पर मंडराते खतरों की बात करें, तो जैव विविधता पर दिसंबर 2018 में संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन यानी सीबीडी में पेश की गई छठी राष्ट्रीय रिपोर्ट से पता चला था कि जैव विविधता को खतरे वाली अंतरराष्ट्रीय सूची में गंभीर रूप से लुप्तप्रायः और संकटग्रस्त श्रेणियों में भारतीय जीव प्रजातियों की सूची पिछले कई सालों से बढ़ रही है। इस सूची में शामिल प्रजातियों की संख्या में बढ़ोतरी जैव विविधता और वन्य आवासों पर गंभीर तनाव का संकेत है। एक दशक पहले पेश चौथी राष्ट्रीय रिपोर्ट के अनुसार उस समय इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर की विभिन्न श्रेणियों में गंभीर रूप से लुप्तप्राय और संकटग्रस्त श्रेणियों में भारत की 413 जीव प्रजातियों के नाम थे। पर 2014 में पेश पांचवीं राष्ट्रीय रिपोर्ट में यह आंकड़ा बढ़ कर 646 छठी रिपोर्ट में 683 तक जा पहुंचा।

प्रदूषण का जहर अब मधुमक्खियों और सिल्क वार्म जैसे जीवों के शरीर में पहुंच रहा है। रंग-बिरंगी तितलियों को भी इससे काफी नुकसान हो रहा है। यही नहीं, अत्यधिक प्रदूषित स्थानों पर तो पेड़-पौधों पर भी इसका इतना बुरा प्रभाव पड़ रहा है कि हवा में सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन व ओजोन की अधिक मात्रा के चलते पेड़-पौधों की पत्तियां भी जल्दी टूट जाती हैं।

भारत में इस समय 900 से भी अधिक दुर्लभ प्रजातियां खतरे में हैं। यही नहीं, विश्व धरोहर को गंवाने वाले देशों की सूची में दुनियाभर में भारत का सातवां स्थान है। भारत का समुद्री पारिस्थितिकीय तंत्र बीस हजार से ज्यादा जैविक प्रजातियों के समुदाय की मेजबानी करता है। इनमें से करीब 12 सौ प्रजातियों को संकटग्रस्त व तत्काल संरक्षण के लिए सूचीबद्ध किया गया है। अगर देश में प्रमुख रूप से लुप्त होती कुछेक जीव-जंतुओं की प्रजातियों की बात करें, तो कश्मीर में पाए जाने वाले हांगलू की संख्या सिर्फ दो सौ के आसपास रह गई है, जिनमें से करीब 110 दाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान में हैं। इसी प्रकार दलदली क्षेत्रों में पाए जाने वाली बारहसिंगा हिरण की प्रजाति अब मध्य भारत के कुछ वनों तक ही सीमित रह गई है। वर्ष 1987 के बाद से मालाबार गंधबिलाव नहीं देखा गया है। हालांकि माना जाता है कि इनकी संख्या पश्चिमी घाट में फिलहाल दो सौ के करीब बची है।

दक्षिण अंडमान के माउंट हैरियट में पाया जाने वाला दुनिया का सबसे छोटा स्तनपायी सफेद दांत वाला छछूंदर लुप्त होने के कगार पर है। एशियाई शेर भी गुजरात के गिर वनों तक ही सीमित हैं। कुछ महीने पहले उत्तराखंड से भी चौंकाने वाली रिपोर्ट सामने आई थी, जिसमें बताया गया है कि प्रदेश की नदियों व अन्य जलस्रोतों में मिलने वाली महाशीर, रौला, स्नो ट्राउट, रेनबो ट्राउट, पत्थर चट्टा, असेला, गारा, गूंज, बरेलियस मछलियों की 250 प्रजातियों का अस्तित्व खतरे में हैं और प्रमुख कारण नदियों के आसपास अवैध खनन के चलते पारिस्थितिकीय तंत्र का बिगड़ना है। जिन नदियों में प्रायः 50 से 100 किलो तक वजनी महाशीर जैसी मछलियां बहुतायत में मिलती थी, वहीं अब पांच से दस किलो वजनी मछलियां ढूंढना भी मुश्किल होता जा रहा है। दरअसल उत्तराखंड के ज्यादातर इलाकों में अवैध खनन, लगातार निर्माण कार्य, भू-स्खलन व गलत तरीकों से शिकार के कारण मछलियों के भोजन के स्रोत और पलने-बढ़ने की परिस्थितियां प्रभावित हुई हैं। विशेषज्ञों के अनुसार ऐसे क्षेत्रों में मछलियों के छिपने और प्रजनन की परिस्थितियां प्रतिकूल होती जा रही हैं।

भू-स्खलन के कारण नदियों में गाद बहुत ज्यादा बढ़ गई है। इसके अलावा नदियों में जमा होते कचरे के कारण भी मछलियों का भोजन खत्म हो रहा है। देश में हर साल बड़ी संख्या में बाघ मर रहे हैं। हाथियों के ट्रेनों से कट कर मौत की खबरें अक्सर आाती रहती हैं। अब वन्य तस्कर भी बेखौफ होकर शिकार कर रहे हैं। इन जीवों पर यह संकट वन क्षेत्रों के घटने और विकास परियोजनाओं के चलते वन्य जीवों के आश्रय स्थलों में बढ़ती मानवीय घुसपैठ से ज्यादा गहराया है। वन्य जीवों को विलुप्त होने से बचाने के लिए पहला कानून 'वाइल्ड एलीकेंट प्रोटेक्शन एक्ट' ब्रिटिश राज में 1872 में बनाया गया था। इसके बाद वर्ष 1927 में 'भारतीय वन अधिनियम' बना कर वन्य जीवों का शिकार और वनों की अवैध कटाई को अपराध की श्रेणी में रखते हुए दंड का प्रावधान किया गया। 1956 में एक बार फिर 'भारतीय वन अधिनियम' पारित किया गया और वन्य जीवों के बिगड़ते हालात में सुधार के लिए वर्ष 1983 में 'राष्ट्रीय वन्य जीव योजना' की शुरुआत की गई, जिसके तहत कई राष्ट्रीय उद्यान और वन्य प्राणी अभयारण्य बनाए गए। हालांकि राष्ट्रीय उद्यान बनाने का सिलसिला ब्रिटिश काल में ही शुरू हो गया था, जब पहला राष्ट्रीय उद्यान 1905 में असम में बनाया गया था।

दूसरा राष्ट्रीय उद्यान-जिम कार्बेट वर्ष 1936 में बंगाल टाइगर के संरक्षण के लिए बनाया गया था। लेकिन आज राष्ट्रीय उद्यानों की संख्या बढ़ कर एक सौ तीन हो गई है और देश में कुल 530 वन्य जीव अभयारण्य भी हैं, जिनमें 13 राज्यों में 18 बाघ अभयारण्य भी स्थापित किए गए हैं। आजादी के बाद से वन्य जीवों के संरक्षण के लिए परियोजनाएं चलाई गईं। इनमें 'कस्तूरी मृग परियोजना 1970', 'प्रोजेक्ट हुंगल 1970', 'गिर सिंह परियोजना 1972', 'बाघ परियोजना 1973', 'कछुआ संरक्षण परियोजना 1975', 'गैंडा परियोजना 1987', 'हाथी परियोजना 1992', 'गिद्ध संरक्षण परियोजना 2006', 'हिम तेंदुआ परियोजना 2009' शामिल हैं। इस तरह की परियोजनाएं शुरू किए जाने के बावजूद शेर, बाघ, हाथी, गैंडे इत्यादि अपना अस्तित्व बचाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। पर्यावरण वैज्ञानिकों का कहना है कि चूंकि पक्षी आसमान में ज्यादा समय तक रहते हैं और ज्यादा तेज सांस लेते हैं, इसलिए इंसानों की अपेक्षा प्रदूषण का दुष्प्रभाव पक्षियों की सेहत पर ज्यादा पड़ता है। आसमान में उड़ान भरते समय वायु में घुले प्रदूषण कणों के उनके शरीर में प्रवेश करने की संभावना बहुत ज्यादा रहती है।

ठंड के मौसम में तो हजारों किलोमीटर दूर से विदेशी परिंदे हर साल दिल्ली सहित भारत के कई हिस्सों का रुख करते हैं, किंतु दिल्ली और आसपास के इलाकों में तो सर्दी के दौरान प्रदूषण अब इस कदर बढ़ जाता है कि परिंदों में अब इस मौसम में दिल्ली से पलायन करने की प्रवृत्ति देखी जा रही है। अगर विदेशी परिंदों के उत्तर भारत पहुंचने की ही बात करें तो इनकी संख्या साल दर साल किस कदर घट रही है। इसका अनुमान आंकड़ों से बखूबी लगाया जा सकता है। जहां 2016-17 में यहां पहुंचने वाले पक्षी 'ग्रेट कारमोरेंट' की संख्या चार सौ पचहत्तर थी, वहीं 2018-19 में साढ़े तीन सौ दर्ज की गई। इसी प्रकार 2016-17 में नार्दर्न शावलर की संख्या 96, 2017-18 में 18 और 2018-19 में मात्र एक दर्ज की गई। पर्यावरण वैज्ञानिक बताते हैं कि प्रदूषण और स्मॉग भरे वातावरण में कीड़े-मकौड़े सुस्त पड़ जाते हैं।

प्रदूषण का जहर अब मधुमक्खियों और सिल्क वार्म जैसे जीवों के शरीर में भी पहुंच रहा है। यही नहीं, अत्यधिक प्रदूषित स्थानों पर तो पेड़-पौधों पर भी इसका इतना बुरा प्रभाव पड़ रहा है कि हवा में सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन और ओजोन की अधिक मात्रा के चलते पेड़-पौधों की पत्तियां भी जल्दी टूट जाती हैं। अगर इस ओर जल्दी ध्यान नहीं दिया गया तो आने वाले समय में स्थितियां इतनी खतरनाक हो जाएंगी कि धरती से पेड़-पौधों तथा जीवों की ज्यादातर प्रजातियां विलुप्त हो जाएंगी।

■ योगेश कुमार गोयल
(वरिष्ठ पत्रकार)

ट्विटर

बच्चों के स्कूल बैग का वजन कम करने की गाइडलाइन बनी है। इसे लागू कराने की जिम्मेदारी राज्य सरकारों की है। राज्यों को इस दिशा में गंभीरता दिखानी होगी।

रमेश पोखरियाल निशंक, केंद्रीय मंत्री

बच्चों के स्कूल बैग के वजन को कम करने को लेकर केंद्र सरकार को सभी राज्यों की बैठक बुलानी चाहिए, ताकि इस व्यवस्था को पूरे देश में एक साथ लागू किया जाए।

राम बिलास शर्मा, शिक्षा मंत्री हरियाणा

सत्यार्थ

कर्म को मानें श्रेष्ठ

रेल में बैठकर यात्रा कर रहे एक सेठ ने जब अपने खाने का डिब्बा खोलना चाहा, तो पास ही बैठे एक खद्दरधारी नेता को देखकर उन्हें कुछ शंका हुई। कुछ देर तो सेठजी चुप रहे, मगर जब बर्दाश्त न हुआ, तो उन्होंने पूछा- नेताजी, आप किस जाति के हैं? गुस्ताखी माफ करना, जरा खास काम है, इसलिए पूछने की हिम्मत की। नेताजी बोले-जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान वाली कहावत क्या सेठजी आपने नहीं सुनी? सेठ बोले- साधु से जाति नहीं पूछेंगे नेताजी! पर आपने तो गेरुए कपड़े नहीं पहने हैं। खादी तो आज कल सभी जातियों के लोग नेतागीरी चमकाने को पहन लेते हैं। आपको अपनी जाति बताने में हर्ज क्या है? इस पर नेताजी बोले- नहीं सेठजी, जाति बताने से या छिपाने से कुछ नहीं होता। सेठजी ने एक बार फिर आग्रह किया तो नेताजी बोले-किसी एक जाति का होऊं तो बताऊं। इस पर सेठजी ने चुटकी लेते हुए कहा- तो फिर क्या नेताजी आप वर्णसंकर हैं? शायद आपके पिता ने दूसरी जाति की लड़की से शादी की होगी। पिता के चरित्र पर चोट थी, सो नेताजी को कहना ही पड़ा कि आप जाति पूछ रहे हैं तो सुनिए- सुबह जब मैं घर-आंगन-शौचालय की सफाई का कार्य करता हूं, तो मेहतर हो जाता हूं। जब अपने जूते साफ करता हूं, तो चर्मकार हो जाता हूं। दाढ़ी बनाते वक्त नाई एवं कपड़े धोते समय धोबी हो जाता हूं। पानी भरते वक्त कहार, हिसाब करते वक्त बनिया और कॉलेज में पढ़ते समय ब्राह्मण हो जाता हूं। अब आप ही यह तय करें कि मेरी जाति क्या है? ये नेताजी और कोई नहीं, बल्कि प्रख्यात गांधीवादी विचारक आचार्य जेबी कृपलानी थे, जिनका कहना था कि व्यक्ति को जाति से नहीं, उसके कर्मों से पहचानो।

■ राधा नावीज

मौसम के साथ ग्रह दोष भी हो सकते हैं आपके बार-बार बीमार पड़ने की वजह

इस वक्त सारी दुनिया भयंकर बीमारी कोरोना वायरस की चपेट में है। रोजाना नए-नए मामले सामने आ रहे हैं। मौसम में हो रहे लगातार बदलाव से सर्दी, खांसी, जुकाम और फ्लू की बीमारियां तेजी से फैल रही हैं। अगर आपको भी इस तरह की समस्याओं का सामना बार-बार करना पड़ रहा है। या फिर आपके घर में कोई बार-बार बीमार पड़ रहा है तो मौसम के साथ-साथ कई ग्रह दोष भी इस समस्या के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं। आइए हम आपको बताते हैं किस ग्रह के दोष से कौन सी बीमारियां होती हैं और क्या हो सकते हैं इनके उपाय।

सूर्य ग्रह के दोष की बीमारियां

सूर्य देव को ग्रहों का राजा माना जाता है। सभी ग्रहों को शक्ति सूर्य से ही प्राप्त होती है। अगर आपकी कुंडली में सूर्य का दोष है तो आपको हड्डियों से जुड़ी बीमारियां या फिर आंखों की बीमारी हो सकती है। हृदय रोग, पाचन तंत्र की बीमारियां और टीबी भी सूर्य दोष के कारण ही होती है। उपाय के तौर पर आप रोजाना स्नान के बाद सूर्य को अर्घ्य दें और तांबे के पात्र से जल पिएं।

चंद्रमा के दोष से होने वाली बीमारियां

चंद्रमा का नियंत्रण व्यक्ति की सोच और मनोदशा पर होता है। इसके दोष के कारण डिप्रैशन, अनिद्रा घबराहट और बेचैनी जैसी समस्याएं होती हैं। हायपरटेंशन की समस्या भी चंद्रमा के दोष के कारण ही होती है। इसके लिए आपको पूर्णिमा और एकादशी का उपवास रखना चाहिए और हर सोमवार मंदिर में जाकर शिवजी की पूजा करनी चाहिए। आप चांदी का छल्ला भी धारण कर सकते हैं।

मंगल ग्रह के दोष की बीमारियां

मंगल ग्रह का मुख्य रूप ये संबंध रक्त से होता है। इससे जुड़े दोष होने पर व्यक्ति को हाई ब्लड प्रैशर या फिर बुखार की भी समस्या हो सकती है। इसकी वजह से त्वचा की भी बीमारियां हो सकती हैं। उपाय के तौर पर आप मंगलवार का उपवास रखें। गुड़ का सेवन करना भी लाभ दे सकता है। लाल वस्त्र और लाल वस्तुओं का दान कर सकते हैं।

बुध ग्रह की बीमारियां

ग्रहों के राजकुमार बुध का संबंध व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता से होता है। बुध के दोष से ही नाक, कान और गले की बीमारियां हो जाती है। सर्दी, जुकाम और बुखार भी बुध के दोष के कारण होता है। उपाय के तौर पर आपको कपूर, लौंग और इलाइची हर वक्त साथ में रखनी चाहिए। तुलसी के पत्तों का सेवन करने से लाभ होगा। वहीं गायत्री मंत्र का जप भी फायदेमंद साबित हो सकता है।

बृहस्पति की बीमारियां

बृहस्पति ग्रह के दोष के कारण हेपेटाइटिस और पेट की गंभीर बीमारियां हो सकती हैं। इस ग्रह की खराब दशा में व्यक्ति को पैसों की कमी का भी सामना करना पड़ता है। इसके दोष करने के लिए आपको प्रातः सूर्य को हल्दी मिलाकर जल चढ़ाना चाहिए। उपाय के तौर पर आप सोने का छल्ला तर्जनी उंगली में धारण कर सकते हैं। रोजाना विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ करें।

शुक्र ग्रह से होने वाली बीमारियां

शुक्र ग्रह का दोष होने पर व्यक्ति को यौन रोग हो सकते हैं। हार्मोंस में असंतुलन के कारण बीमारियां उत्पन्न हो सकती हैं। महिलाओं को जननांगों से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं। बतौर उपाय आपको शुक्रवार के दिन स्फटिक की माला गले में धारण करनी चाहिए। सफेद चीजों का सेवन कम से कम करें।

शनि दोष से होने वाली बीमारियां

न्याय के देवता कहलाने वाले शनि देव की तिरछी नजर होने पर व्यक्ति के शरीर में विभिन्न प्रकार के दर्द और हड्डी की समस्याएं हो सकती हैं। शनि दोष को दूर करने के लिए आपको प्याज, लहसुन और मांस मदिरा का सेवन बंद कर देना चाहिए। लोहे का छल्ला बीच की उंगली में पहन सकते हैं। शनिवार की शाम को पीपल के पेड़ के नीचे सरसों के तेल का दीया जरूर जलाएं।

राहु के दोष में होती हैं ये बीमारियां

राहु के दोष होने पर व्यक्ति को याददाश्त संबंधी बीमारियां हो सकती हैं। जो कि कई बार आगे चलकर गंभीर रूप ले लेती हैं। इसके लिए आप रोजाना की चीजों में नीले रंग का प्रयोग करें और अपने आहार को शुद्ध और सात्विक बनाए रखें। गले में तुलसी की माला भी धारण कर सकते हैं।

केतु की बीमारियां

केतु ग्रह से जुड़े दोष बनने पर व्यक्ति को रक्त और त्वचा संबंधी बीमारियां हो सकती हैं। इनके निवारण के तौर पर आप खुद को सदैव स्वच्छ रखें और जरूरतमंदों को दान करें। धार्मिक उपदेशों को जरूर सुनें।

बृहस्पति का मकर में प्रवेश दिलाएगा शनि-मंगल ग्रह के उत्पीड़न से मुक्ति

29 मार्च से कोरोना वायरस का असर होगा कम, लोगों को मिलेगी राहत

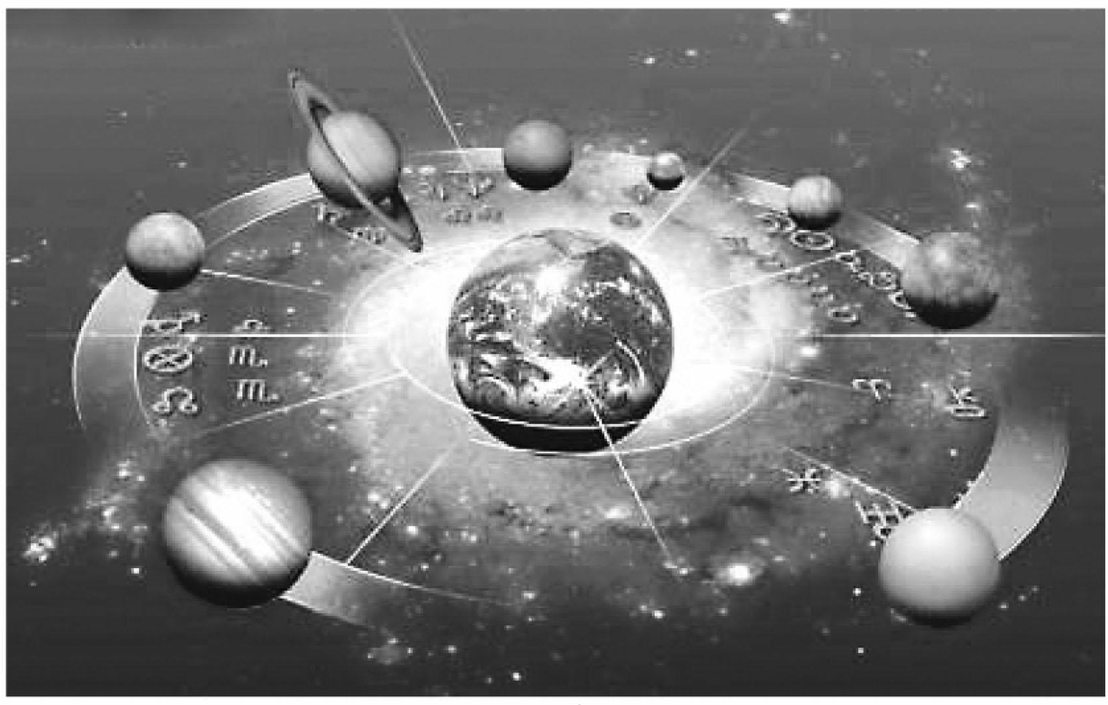

कोरोना वायरस ने जहां दुनिया को दहला दिया है, वहीं अर्थव्यवस्था का भट्ठा बैठा दिया है। पर क्यों होती है कोरोना जैसी महामारी, जानते हैं ज्योतिष के नजरिए से। यूं तो आकाश मंडल का हर ग्रह और देह का प्रत्येक तत्व अपनी भिन्न या विचित्र स्थिति में अथवा असंतुलित होने पर तनाव का सबब बनता है पर जो ग्रह एक साथ मानव सभ्यता के बड़े हिस्से पर असर डालता हैं वो है शनि, बृहस्पति और मंगल। शनि, राहु और केतु ये तीनों ग्रह अप्रत्याशित परिणामों के जनक माने जाते हैं। शनि जब -जब अपनी स्वराशि में आता है, विचित्र स्थितियां निर्मित करता है। आपको बता दें कि शनि ने इस साल 24 जनवरी को अपनी राशि मकर में प्रवेश किया था। यह शनि दुनिया में बड़ी महामारियों का गवाह रहा है। आइए नजर डालते हैं कि कब-कब शनि ने दुनिया को हिलाकर रख दिया।

चेचक का संक्रमण

इतिहास के चश्मे से देखें तो 165 ईस्वी में जब शनि मकर में प्रविष्ट हुए थे, तब इतालवी प्रायद्वीप में चेचक के संक्रमण से पांच मिलियन (50 लाख) लोगों की मौत हुई थी। 252 में जब शनि जब मकर में पहुंचे तो कहा जाता है कि प्लेग आफ साइप्रियन के प्रकोप से रोम में महीनों तक हर रोज लगभग 5,000 से ज्यादा लोग काल-कलवित होते रहे।

प्लेग ने मचाई तबाही

547 में जब शनि अपनी स्वराशि में पहुंचे तो मिस्र से बूबोनिक प्लेग फैला, जिसे प्लेग ऑफ जस्टिनियन कहा गया और ये वहां से फैलकर कुस्तुंतुनिया पहुंच गया, जो बोस्पोरुस जलसंधि और मारमरा सागर के संगम पर स्थित एक ऐतिहासिक शहर है, जो रोमन, बाइजेंटाइन, और उस्मानी साम्राज्य की राजधानी हुआ करता थी। बाइजैंटीनी इतिहास लेखक प्रोसोपियस के अनुसार तब प्रतिदिन 10,000 से अधिक लोगों की मौत हो रही थी। तब इस प्लेग ने संपूर्ण ज्ञात विश्व की एक चौथाई जनसंख्या को समाप्त कर दिया था।

ग्रेट प्लेग ऑफ लंदन

1312 में जब शनि ने अपने घर में पैर रखे तो यूरोप से प्लेग ने वापसी की और तब इसके कहर से दुनिया भर में 75 मिलियन (7.5 करोड़) लोगों के मरने का अनुमान लगाया गया, जिसे ब्लैक डेथ कहा गया। यह रोग 1344 से 1348 में भूमध्यसागर और पश्चिमी यूरोप तक 20 से 30 मिलियन यूरोपियों के मरने का अनुमान था, जो कुल जनसंख्या का एक तिहाई हिस्सा था और शनिदेव तब भी स्वराशि में ही थे। 1666 के ग्रेट प्लेग ऑफ लंदन में तब इंग्लैंड में 100,000 लोगों की मौत का कारण बना था, जो तब लंदन की 20 प्रतिशत आबादी थी। शनि तब भी अपनी स्वयं की राशि में लंगर डाले हुए थे।

गुजरात में आया प्लेग

19वीं सदी के मध्य में चीन से थर्ड पैन्डेमिक ने सिर उठाया, जिससे केवल भारत में 10 मिलियन (एक करोड़) लोगों की मौत हो गई थी और इसी बीमारी ने 1902 में अमेरिका के सैनफ्रांसिस्को से शुरुआत करके वहां पहली बार प्लेग का कहर बरपाया। प्लेग ने जब-जब बिजली गिराई, तब-तब शनि अपने ही घर में चलायमान थे। यहां तक कि गुजरात के सूरत में जब 1994 में प्लेग ने आफत मचाई, तब भी शनि अपनी ही राशि में गतिशील थे।

शनि अब भी मकर में

इस समय शनि स्वयं की राशि मकर में संचार कर रहे हैं, जो अब की मारक महामारी का मुख्य कारक बन गए हैं, जिसे कोरोना वायरस कहा जा रहा है। 15 मार्च से सूर्य का राशि परिवर्तन कुछ राहत देने की नाकाम कोशिश करेगा। मंगल अभी गुरु राशि धनु में

चलायमान हैं, लेकिन 22 मार्च को जब मंगल शनि की राशि मकर में चरण रखेगा और मानव सभ्यता को बेचैन करेगा। तब वो शनि के संग युति करके इस महामारी के साथ कोई और अप्रिय खबर लाएगा। यह योग किसी दुर्घटना के साथ प्राकृतिक आपदा से जान-माल की हानि का संकेत दिए जा रहा है, लेकिन 29 मार्च की शाम 7 बजकर 8 मिनट पर बृहस्पति का मकर में प्रवेश शनि-मंगल के इस उबाल पर पानी डाल देगा। शनि-बृहस्पति की युति आज के डरावने परिदृश्य में ठंडी हवा की बयार की तरह आएगी और मरहम लगाएगी और इस महामारी की मारक तासीर में कमी आएगी। 4 मई 2020 की शाम 7 बजकर 59 मिनट पर जब मंगल शनि से पिंड छुड़ाएगा और कुंभ राशि में जाएगा, विश्व की नकारात्मकता में सहसा कमी आएगी और शुभ फलों में इजाफा होगा और मई के मध्य में परिस्थितियां बदल जाएंगी। सितारों का संकेत है कि इस महामारी का अंत एक झटके में हो जाएगा। तब तक सावधानी आपके कष्ट में कमी का माध्यम बनेगी।

सिर्फ नमस्कार ही नहीं, पूजापाठ की ये क्रियाएं भी दूर करती हैं कई बीमारियां

हिंदू धर्म में पूजापाठ के बाद ईश्वर के सम्मुख हाथ जोड़कर यह प्रार्थना की जाती है कि हे भगवान हमें सुख समृद्धि के साथ अच्छी सेहत भी प्रदान करें। इतना ही नहीं भारतीय परंपरा में अपने से बड़ों और मेहमानों का अभिवादन भी हाथ जोड़कर नमस्कार करके किया जाता है। जब से कोरोना वायरस ने पांव पसारे हैं, तब से सारी दुनिया हाथ मिलाने की बजाए हाथ जोड़ने पर जोर दे रही है। यहां तक कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप भी अपने मेहमानों का स्वागत हाथ जोड़कर कर रहे हैं, लेकिन हम आपको बता दें कि हिंदू धर्म में सिर्फ हाथ जोड़ना ही नहीं, बल्कि कुछ और भी ऐसी क्रियाएं हैं तो कई बीमारियों को दूर रखती हैं। आइए जानते हैं इनके बारे में-

एक्यूप्रेशर का लाभ

हथेलियों में शरीर के अन्य अंगों की नसों के भी बिंदू होते हैं, जिन्हें एक्यूप्रेशर पाइंट कहा जाता है। ताली बजाने से इन बिंदुओं पर दबाव पड़ता है और इनसे संबंधित अंगों में रक्त संचार बढ़ता है, जिससे वे बेहतर काम करने लगते हैं। ताली बजाना हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होता है।

आरती के वक्त ताली बजाने के लाभ

ईश्वर की पूजा करते हुए ताली बजाने का चलन है। भगवान की स्तुति, भक्ति, आरती आदि धर्म-कर्म करते हुए ताली बजाई जाती है। धार्मिक मान्यता है कि इससे भगवान प्रसन्न होते हैं। विज्ञान के अनुसार ताली बजाना एक प्रकार का व्यायाम ही है, ताली बजाने से हमारे पूरे शरीर में खिंचाव होने लगता है और हमारे शरीर की मांसपेशियां सक्रिय हो जाती हैं। कुछ ही देर में हमारे शरीर से पसीना आना शुरू हो जाता है और पूरे शरीर में एक अलग तरह की ऊर्जा पैदा हो जाती है।

ऊं के उच्चारण से इन बीमारियों में लाभ

ऊं के उच्चारण से उत्पन्न होने वाली तरंगें दिमाग को शांत करने के साथ ही मन को सुकून पहुंचाती हैं। ओम का उच्चारण करने से गले में वाइब्रेशन होती है, जिससे थाइरॉयड प्रॉब्लम से बचा जा सकता है। ओम का उच्चारण करने से स्ट्रेस और घबराहट जैसी समस्या दूर होती हैं। रोज इस जाप को करने से लंग्स, बीपी, और ब्लड सर्कुलेशन इम्प्रूव होता है। इससे हार्ट भी हेल्दी रहता है।

घंटी बजाने से नष्ट होते हैं वायरस

विज्ञान कहता है कि घंटी बजाने से वातावरण में कंपन्न पैदा होती है। इससे आस-पास के माहौल में स्थित जीवाणु, विषाणु मर जाते हैं। जहां सुबह शाम मंदिर की घंटी बजाई जाती है, वहां का वातावरण शुद्ध रहता है। इस ध्वनि के पीछे सेहत से जुड़ा कारण है कि यह ध्वनि हमारे मन को शांत करने में मददगार होती है, जिससे मानसिक तनाव का स्तर घटता है। जब हम इस ध्वनि से उत्पन्न कंपन्न को शांत मन से महसूस करते हैं तो हमारा बीपी नियंत्रित होता है।

घर की ये मामूली सी दिखने वालीं वस्तुएं डालती हैं आपकी किस्मत पर बड़ा असर

वास्तु का घर की खुशहाली, परिवार की सेहत और धन संपन्नता से सीधा वास्ता है। वास्तु से जुड़ी छोटी-छोटी बातें घर पर अच्छा और बुरा प्रभाव डालती हैं। घर में इस्तेमाल में आने वाली कुछ ऐसी चीजें होती हैं जिनकी अनदेखी घर में नकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करती हैं। जिनसे घर में तनाव उत्पन्न होने लगता है। लोग बीमार पड़ने लगते हैं, पैसों की कमी हो जाती है। आइए जानते हैं कौन सी हैं ये वस्तुएं-

झाड़ू को ऐसे न रखें

घर में झाड़ू को मां लक्ष्मी का दर्जा दिया जाता है और इसका सीधा संबंध घर की आर्थिक स्थित से होता है। झाड़ू का अनादर करना, टूटी हुई झाड़ू को रखना और झाड़ू से पैर लगाना बहुत ही गलत प्रकार का व्यवहार माना जाता है। जो कि सीधे तौर पर वास्तु दोष को बताता है। झाड़ू को घर में ऐसे स्थान पर रखना चाहिए, जो सबकी नजरों से दूर रहे। सूर्यास्त के वक्त कभी भी घर में झाड़ू नहीं लगानी चाहिए। ऐसा करने से दरिद्रता आती है।

कैंची रखें ऐसे

कैंची का संबंध राहु से माना जाता है और यह घर वालों के आपसी रिश्ते प्रभावित करती है। कभी भी खाली कैंची नहीं चलानी चाहिए। ऐसा करने से आपके रिश्तों में दरार पड़ सकती है। कैंची को सदैव कपड़े में लपेटकर किसी छिपे स्थान पर रखना चाहिए। अगर कोई पड़ोसी कैंची मांगने आता है तो उसे उधार न दे, ऐसा करने से उसके साथ संबंध खराब होते हैं।

चाकू से होता है ऐसा

चाकू घरों में अक्सर रसोई में ही रखा जाता है, किंतु ध्यान रखें कि चाकू हमेशा उल्टा करके रखें। उसके धार वाले हिस्से को नीचे की ओर रखें। इससे आप संतान पक्ष से खुश रहेंगे। ध्यान रखें कि घर में कभी भी ऐसे चाकू छुरी नहीं रखने चाहिए, जिनका आप इस्तेमाल न करते हों। ऐसा होने से आपके घर में दरिद्रता के साथ ही दांपत्य संबंधों में भी कड़वाहट आनी शुरू हो जाती है। घर में आपस में भी किसी के हाथ में चाकू सीधे नहीं पकड़ाना चाहिए।

घर के जूते चप्पल

घर में प्रयोग होने वाले जूते चप्पलों का प्रयोग सीधे शनि महाराज से ताल्लुक रखता है। ध्यान रखें, घर में कभी भी जूते-चप्पल इधर-उधर बिखेरकर नहीं रखना चाहिए। इससे आप शनि के कोपभाजन का शिकार भी हो सकते हैं। इतना ही नहीं बाहर से आते वक्त जूते सदैव घर के बाहर उतारकर घर में प्रवेश करना चाहिए, इससे बाहर की नकारात्मक ऊर्जा बाहर ही रह जाती है, लेकिन ध्यान रखें कि कभी भी मुख्य द्वार के सामने जूते नहीं उतारने चाहिए।

पांवदान नहीं होना चाहिए ऐसा

घर के मुख्य द्वार पर पांवदान कभी भी गंदा नहीं होना चाहिए। उसे रोजाना झाड़ू लगाने के बाद झाड़कर वापस डाल देना चाहिए। उसके आस-पास कूड़ा बिल्कुल भी न जमा होने दें। रोजाना ईश्वर से अपने घर आगमन की प्रार्थना करनी चाहिए। पांवदान पर किसी तरीके स्वास्तिक या फिर अन्य कोई भी धर्म से जुड़ा चिह्न नहीं होना चाहिए।

वक्त रहते बदल दें अपनी ये आदतें, नहीं तो बना सकती हैं कंगाल

आदतें अच्छी या बुरी कैसे भी हो सकती हैं, लेकिन कुछ आदतें व्यक्ति के जीवन को इस कदर प्रभावित करती हैं कि वह हर समय तकलीफ और समस्याओं से ही जूझता रहता है। जी हां वास्तु शास्त्र में इसका उल्लेख मिलता है, लेकिन यह भी कहा गया है कि अगर समय रहते ही इन आदतों में सुधार कर लिया जाए तो ये लाइफ को खुशियों की तमाम सौगात भी दे सकती है। ऐसी ही कुछ आदतों का हम यहां जिक्र कर रहे हैं, यदि आप भी जाने-अंजाने ऐसा करते हैं तो कोशिश करें अपनी इन खराब आदतों को बदलने की, जिससे आपका जीवन खुशहाल हो जाएगा।

आप भी ऐसे तो नहीं करते बात

आपने अक्सर ही घर पर बड़े-बुजुर्गों को यह कहते सुना होगा कि शांति से बात करनी चाहिए। किसी से कभी भी चिल्लाकर बात नहीं करनी चाहिए, लेकिन क्या आप जानते हैं कि जोर से या फिर चिल्लाकर किसी से भी बात करना क्यों गलत होता है? वास्तु शास्त्र में बताया गया है कि ऐसा करने से शनि दोष का प्रभाव बढ़ता है। जीवन में सबकुछ उल्टा-पुल्टा होने लगता है। विरोधियों की संख्या बढ़ने लगती है। बेवजह की टेंशन बढ़ती है और काम भी बिगड़ने लगते हैं, लेकिन शांति और स्नेह से बात करने से शनि देव प्रसन्न होते हैं। यही नहीं अगर जीवन में कुछ परेशानियां भी हैं तो वह भी खत्म होने लगती हैं।

यह आदत तो बिल्कुल ही खराब है

आपने किताबों में पढ़ा होगा या फिर घर-परिवार में बड़े-बुजुर्गों से सुना होगा कि जल्दी सोना और जल्दी उठना सेहत के लिए अच्छा होता है, लेकिन आजकल देर से सोना और देर तक सोना एक अलग तरह का स्टेट्स सिंबल माना जाने लगा है। हालांकि कई बार लोग काम अधिक होने का भी तर्क देते हैं। जिसके चलते देर रात सोना होता और देर सुबह से उठना होता है, लेकिन वास्तु शास्त्र में इस आदत को पूरी तरह से गलत बताया गया है। कहा जाता है कि इससे व्यक्ति का स्ट्रेस बढ़ता है और मानसिक तकलीफें बढ़ती हैं। कई बार सेहत में भी लगातार गिरावट होने लगती है।

ऐसा करने से रूठ ही जाती हैं मां लक्ष्मी

आपने अक्सर ही ऐसे लोगों को देखा होगा जो अपने आस-पास देखे बिना कहीं भी थूक देते हैं। वास्तु शास्त्र में इस आदत को तुरंत ही बदल डालने के बारे में कहा गया है। इसके मुताबिक ऐसा करने वालों से मां लक्ष्मी हमेशा के लिए रूठ जाती हैं। इन्हें जीवन भर पैसों और मान-सम्मान की तंगी झेलनी पड़ती है। इससे कई बार डिप्रेशन तक का शिकार हो जाते हैं। वहीं कभी इन्हें किसी के चलते पैसा या मान-सम्मान मिल भी जाए तो वह इनकी इसी आदत के चलते ज्यादा देर तक नहीं ठहरता। इसलिए ऐसी आदत को जितनी जल्दी हो बदल देना ही उचित होता है।

इनका भूले से भी न करें अपमान

आपने यह तो सुना ही होगा कि अपने से बड़ों का हमेशा ही सम्मान करना चाहिए। धर्मशास्त्र भी यही कहते हैं। मान्यता है कि जिस घर में बड़े-बुजुर्गों का सम्मान किया जाता है उनके जीवन में कभी भी किसी भी तरह की परेशानी नहीं आती, लेकिन अगर कोई बड़े-बुजुर्गों का अपमान करता है। उनके साथ ऊंची आवाज में बात करता है। या फिर उनका ख्याल नहीं रखता।

तो ऐसे लोगों के जीवन में सुख-समृद्धि की कमी बनी ही रहती है। मां लक्ष्मी ऐसे लोगों पर कभी भी कृपा नहीं करतीं, लेकिन अगर आप बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करते हैं, उनका ख्याल रखते हैं मां लक्ष्मी के साथ ही सभी देवी-देवताओं की कृपा बरसती है। जीवन में किसी भी बात की कोई कमी नहीं होती।

ऐसा करने से घटने लगता है मान-सम्मान

वास्तु शास्त्र में साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देने के लिए कहा गया है। कहा जाता है जितनी सफाई रखी जाए मां लक्ष्मी उतनी ही मेहरबान होती हैं, लेकिन यह केवल घर या फिर कपड़ों की नहीं, बल्कि पैरों की भी होनी चाहिए। कहते हैं कि पैर जितने साफ रखें जाएं, किस्मत उतनी ही अच्छी होती है, लेकिन अधिकतर लोग अपने चेहरे का तो ख्याल रखते हैं, लेकिन पैरों पर ध्यान नहीं जाता। वास्तु के मुताबिक अगर किसी के पैर गंदे होते हैं तो उसके मान-सम्मान में कमी होती है। मानसिक तनाव भी बढ़ता है। साथ ही एक के बाद एक समस्या लगी ही रहती है।

दान पुण्य के ये कार्य बिगाड़ देंगे आपकी आर्थिक स्थिति

दान पुण्य के कार्यों के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आय का कुछ हिस्सा अवश्य निकालना चाहिए। धार्मिक उपदेशों में अक्सर ऐसी बातें कही जाती हैं, लेकिन क्या आपको पता है कि अनजाने में किया गया दान आपको पुण्य देने की बजाए कंगाल बना सकता है। ज्योतिष की मशहूर लाल किताब में दान से जुड़े कुछ ऐसे नियमों के बारे में बताया गया है, जिनको जानना हर व्यक्ति के लिए बहुत जरूरी है।

पीली वस्तुओं का दानः अगर आपकी कुंडली में सूर्य मजबूत स्थिति में है तो आपको भूलकर भी सोना, गेहूं और तांबे जैसी पीली वस्तुओं का दान नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से आपका बलशाली सूर्य कमजोर हो सकता है। इससे कार्यक्षेत्र में परेशानी, धन का अभाव और स्वास्थ्य की हानि हो सकती है।

चंद्रमा इस भाव में हो तो : अगर आपकी कुंडली में चंद्रमा द्वितीय और चतुर्थ भाव में हो तो आपको भूलकर भी दूध, चांदी, मोती या फिर चावल जैसी सफेद वस्तुओं का दान नहीं करना चाहिए। यहां तक कि दोस्तों और रिश्तेदारों को उपहार के रूप में भी नहीं देना चाहिए। ऐसा करने से आपके घर में तंगी पांव पसार सकती है।

अगर मंगल हो मजबूत : अगर आपकी राशि में मंगल मजबूत स्थिति में है तो आपको भूलकर भी दान में मीठी चीजें, शहद या फिर लाल वस्तुएं नहीं देनी चाहिए। ऐसा करने से आपके ऊपर ही विपरीत प्रभाव पड़ सकता है और आपके ग्रहदोष कम होने की बजाए आपकी मुश्किलें और बढ़ सकती हैं।

जिनका बुध मजबूत होः जिन जातकों की कुंडली में बुध मजबूत स्थिति में हो उन्हें, किसी भी व्यक्ति को कलम या फिर पैन उपहार के रूप में भी नहीं देना चाहिए। यहां तक कि उस व्यक्ति को हरी दाल या फिर हरे वस्त्र भी किसी को नहीं देने चाहिए। ऐसा करने से बुध उनके ऊपर उल्टा प्रभाव छोड़ सकता है।

अगर बृहस्पति हो बलशालीः अगर आपकी राशि के लिए देवों के गुरु बृहस्पति बलशाली हों तो आपको किसी को भी अपने हाथ सोने की वस्तुएं उपहार में नहीं देनी चाहिए। पीले कपड़े और केसर की बनी चीजें भी किसी को भूल से न दें।

शुक्र के मजबूत होने परः अगर किसी व्यक्ति की कुंडली में शुक्र अच्छी स्थिति में है तो उसे किसी दूसरे को रेडिमेड कपड़े, परफ्यूम या फिर आभूषण नहीं देने चाहिए। ऐसा करने से उनके दांपत्य जीवन में परेशानियां आ सकती हैं और भौतिक सुविधाओं में कमी आ सकती है।

Printed, Published & Owner by ATUL SHARMA & Printed at SARANGLE PRINTERS, BASTI GUZAN JALANDHAR (PUNJAB) and Published from ATUL SHARMA, NN-453 GOPAL NAGAR JALANDHAR (PUNJAB)

Editor: ATUL SHARMA*

*Responsible for selection of News under the PRB ACT. PUNHIN/2019/77863, All Rights Reserved. Reproduction in whole or in part without permission is prohibited. All disputes shall be settled at Jalandhar jurisdiction only.

कैप्टन अमरिन्दर सिंह द्वारा रंजन गोगोई का राज्य सभा के सदस्य के तौर पर नामांकन गलत और संदेहपूर्ण करार

■ चंडीगढ़/प्रभातसूरी

भारत के पूर्व चीफ़ जस्टिस रंजन गोगोई की राज्य सभा के सदस्य के तौर पर नामांकन को गलत और संदेहपूर्ण बताते हुए पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिन्दर सिंह ने कहा कि इससे स्पष्ट हो गया कि श्री गोगोई केंद्र की मौजूदा सरकार के लिए लाभदायक रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि श्री गोगोई के नामांकन पर लाज़िमी तौर पर उंगली उठनी ही थी क्योंकि कोई भी संवेदनशील व्यक्ति सरकार के ऐसे किसी भी कदम का विरोध करेगा। अपनी सरकार के तीन वर्ष पूरे होने पर करवाए गए एक समारोह के दौरान कैप्टन अमरिन्दर सिंह ने कहा सरकारों को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी और वह राजनैतिक फायदों के लिए संस्थाओं को इस्तेमाल नहीं कर सकती जोकि गोगोई के नामांकन के मामले में हुई है।

मुख्यमंत्री ने मुख्य जज के तौर पर सेवा-मुक्ति के छह महीनों से कम समय में भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा गोगोई के नामांकन और इस पद से सेवा-मुक्त होने से कुछ सालों के बाद कांग्रेस की टिकट पर राज्य सभा चुने जाने की समानता को अलग किया। उन्होंने कहा कि श्री मिश्रा, गोगोई की तरह राज्य सभा मैंबर नहीं बने थे बल्कि उन्होंने मुख्य जज के तौर पर सेवा-मुक्त होने के सात साल बाद राज्य सभा की सीट के लिए चुनाव लड़ा था।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पूर्व सेना अधिकारी, जज और सम्बन्धित क्षेत्रों से अन्य लोग अक्सर ही राजनीति में दाखिल होकर चुनाव लड़ते हैं और सेना के पूर्व प्रमुख जनरल जे.जे. सिंह को भी पंजाब विधान सभा चुनाव में अकाली दल ने उनके खिलाफ चुनावी मैदान में उतारा था। कैप्टन अमरिन्दर सिंह ने कहा कि श्री गोगोई भी राजनीति में आने के हकदार हैं परन्तु उनको सेवा-मुक्ति से 4-5 सालों के बाद चुनाव लड़ना चाहिए था। मुख्यमंत्री ने कहा कि वैसे तो उनकी सरकार ने भी सेवा-मुक्त जजों को विभिन्न कमिशनों के लिए नामांकित किया था परन्तु उनका कोई राजनैतिक या सरकार की तरफ कोई झुकाव नहीं था।

कैप्टन अमरिन्दर सिंह ने कहा कि वह स्पष्ट करते हैं कि वह कभी भी चीफ जस्टिस के हक में ऐसा पक्ष लेने के लिए सहमत नहीं होंगे जैसे कि गोगोई के लिए किया गया था।

डिप्टी कमिश्नर ने धार्मिक स्थानों से अनाऊंसमैंट के द्वारा कोरोना वायरस के बारे में लोगों को जागरूक करने के दिये निर्देश

■ जालंधर/विजय कुमार

डिप्टी कमिश्नर जालन्धर श्री वरिन्दर कुमार शर्मा ने कहा अधिकारियों को कहा है कि जिले में कोरोना वायरस से बचाव के लिए प्रयोग की जाएँ वाली सावधानियों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए धार्मिक संस्थाओं का सहयोग लिया जाये। जिला प्रशासकीय कंपलैक्स में मीटिंग की अध्यक्षता करते हुए डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि प्रातःकाल और शाम को धार्मिक स्थानों से कोरोना वायरस से संबन्धित जागरूकता के लिए अनाऊंसमैंट ज़रूर करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इस नेक काम के लिए कोई कमी बाकी ना छोड़ी जाये। उन्होंने कहा कि कैप्टन अमरिन्दर सिंह के नेतृत्व वाली राज्य सरकार और जिला प्रशासन की लोगों की कीमती जानें बचाना पहली प्राथमिकता है। डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि इस वायरस को फैलने से रोकने के लिए उठाए जाने वाले ज़रूरी कदमों से लोगों को पूरे ज़ोरों से लोक जागरूकता लहर चलाई जाये। उन्होंने कहा कि यह मानवता की सच्ची सेवा है और हर अधिकारी और कर्मचारी इस जिम्मेदारी को पूरी मिशनरी भावना से निभाने के लिए पाबंद है। उन्होंने कहा कि राज्य और जिले में इस वायरस को फैलने से रोकने के लिए रोजमर्रा की जांच की जा रही है। कोरोना वायरस को फैलने से रोकने के लिए जिला प्रशासन की तरफ से की जा रही गतिविधियों का जायज़ा लेते हुए डिप्टी कमिश्नर ने कहा कि हर विभाग की तरफ से निभाई जा रही ड्यूटी सन्तोषजनक है। इस वायरस के परहेज से ही बचा जा सकता है। इस अवसर पर अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर विशेष सारंगल, डिप्टी कमिश्नर पुलिस अरुण सैनी, उप मंडल मैजिस्ट्रेट राहुल सिंधु और डा.जय इन्द्र सिंह, सहायक कमिश्नर वर्जित वालिया, डिविज़नल खुराक और सिविल सप्लाई कंट्रोलर नरिन्दर सिंह, सिविल सर्जन डा.गुरिन्दर चावला, डा.सोभना और अन्य भी उपस्थित थे।

पी.सी.एस. अधिकारी को जाती सूचक शब्द बोलने के मामले में डिप्टी कमिश्नर जालंधर और कमिश्नर ऑफ पुलिस से रिपोर्ट तलब

■ चंडीगढ़/चंदन

पंजाब राज्य अनुसूचित जाती आयोग ने पी.सी.एस. अधिकारी को जाती सूचक शब्द बोलने के मामले में स्यु-मोटो लेते हुए डिप्टी कमिश्नर जालंधर और कमिश्नर ऑफ पुलिस से रिपोर्ट तलब की है।

इस सम्बन्धी जानकारी देते हुए पंजाब राज्य अनुसूचित जाति आयोग की चेयरपर्सन श्रीमती तेजिन्दर कौर (सेवामुक्त आई.ए.एस.) ने बताया कि यह मामला तारीख 07-04-2017 के दैनिक भास्कर अखबार में सामने आया था: ''पी.सी.एस. महिला अधिकारी को जाति सूचक शब्द बोलने वाले ऐजंट का ऑडियो रिकॉर्डिंग वायरल.....'' शीर्षक के अंतर्गत जालंधर जिले से संबंधित प्रकाशित खबर के साथ उनके ध्यान में आया है जिस का स्यु-मोटो लेते हुए उन्होंने प्रकाशित खबर को 'पंजाब राज्य अनुसूचित जाति आयोग, एक्ट 2004' की धारा 10 (2) के अंतर्गत विचारा और इस मसले की पड़ताल डिप्टी कमिश्नर, जालंधर और कमिश्नर ऑफ पुलिस, जालंधर के द्वारा करवा कर रिपोर्ट तारीख 26 -03 -2020 को दोपहर 11.00 बजे तक आयोग के सामने पेश करने के हुक्म दिए हैं। उन्होंने यह भी बताया कि आयोग ने यह भी हिदायत दी है कि इस मामले की रिपोर्ट सम्बन्धित उप-मंडल अधिकारी (स) और डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस स्तर के अधिकारी द्वारा उक्त निश्चित तारीख को पेश की जाये।

पी.एस.आई.डी.सी. उद्योगपतियों से कर्ज़ों की वसूली के लिए विशेष मुहिम चलाएगी-कृष्ण कुमार बावा

■ चंडीगढ़/विजय कुमार

आज पंजाब राज्य औद्योगिक विकास निगम लिमिटेड (पी. एस. आई. डी.सी.) के बोर्ड ऑफ डायरैक्टर्ज़ की मीटिंग, मुख्यालय/पी. एस. आई. डी.सी. में पी.एस.आई.डी.सी. के चेयरमैन श्री कृष्ण कुमार बावा की अध्यक्षता में हुई। मीटिंग में बोर्ड ऑफ डायरैक्टर्ज़ के मैंबर, मैनेजिंग डायरैक्टर, श्री वनीत कुमार, आई.ए.एस., अतिरिक्त मैनेजिंग डायरैक्टर, श्रीमती तरुनजीत कौर, आई.ए.एस., शिव इंदर उप्पल, सतविन्दर सिंह चड्ढा, राजेश बाहू, सीनी. जनरल मैनेजर श्री एस.के. आहूजा, सीनी. जनरल मैनेजर/ पी.एस.आई.डी.सी., श्री सतिंदर सिंह चुघ, जनरल मैनेजर और सचिव/ पी.एस.आई.डी.सी. और श्री डी.पी. गुप्ता, स्पैशल इन्क्वायरी उपस्थित थे।

इस दौरान बोर्ड मीटिंग में फ़ैसला लिया गया कि पी.एस.आई.डी.सी. द्वारा लंबे समय से पंजाब की इंडस्ट्री को प्रफुल्लित करने के लिए दिए गए कर्ज़ों को समय पर न लौटाने वालों के खिलाफ़ सख्त कार्यवाई की जाये। उन्होंने कहा कि पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिन्दर सिंह उद्योग को प्रफुल्लित करने के लिए ठोस कदम उठा रहे हैं।

इस दौरान बावा ने कहा कि पंजाब में गोबिन्दगढ़ में बंद पड़े उद्योग में से कैप्टन अमरिन्दर सिंह की सरकार आते ही धुआँ निकलना शुरू हुआ है। उन्होंने कहा कि नये उद्योगों के लगने से पता चलता है कि लोग कैप्टन अमरिन्दर सिंह सरकार द्वारा उद्योगपतियों को दी गई सुविधाओं से संतुष्ट हैं।

सफाई कर्मचारियों को कोरोनावायरस के संभावी खतरे से बचाने के लिए सुरक्षा किटें प्रदान करने हेतु मुख्य सचिव पंजाब को माँग पत्र भेंट

चंडीगढ़/प्रभातसूरी

सफाई कर्मचारी आयोग, पंजाब के चेयरमैन गेजा राम वाल्मीकि द्वारा आज यहाँ पंजाब राज्य के मुख्य सचिव श्री करन अवतार सिंह को एक माँग पत्र भेंट करके माँग की गई कि पंजाब राज्य के सरकारी और अर्ध सरकारी अदारों में सफ़ाई कर्मचारियों/सीवरमैनों को कोरोनावायरस के संभावी खतरे से बचाने के लिए सुरक्षा किटें प्रदान की जाएँ।

अपने माँग पत्र में उन्होंने कहा कि सफ़ाई कर्मचारी /सीवरमैन कार्यालयों में से गन्दगी /गीले और सूखे कूड़े को साफ़ करने का काम करते हैं, इनको कोरोनावायरस की चपेट में जल्द आ जाने की संभावना बनी रहती है। सफाई कर्मचारियों /सीवरमैनों के पास न दस्ताने होते हैं, न मास्क होते हैं, न कोरोनावायरस से बचने के लिए कोई जूते/जुराबें होते हैं और न ही इनको हाथों की सफाई के लिए सैनेटाईज़र दिया जाता है।

इसलिए, पंजाब सरकार के सरकारी और अर्ध सरकारी दफ्तरों में काम करने वाले सफाई कर्मचारियों /सीवरमैनों को सरकारी किटें मुहैया करवाई जाएँ जिनमें दस्ताने, मास्क, जुराबें /जूते, सैनेटाईज़र और अन्य ज़रूरी वस्तुएँ शामिल हैं।

स्पोर्ट्स

खराब फॉर्म और कोरोना ने बढ़ाया विराट के लिए शतकों का इंतजार

■ नई दिल्ली/न्यूज नेटवर्क

विराट कोहली पिछले छह वर्षों में किसी कैलेंडर वर्ष में खेली गयी तीसरी पारी तक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में शतक जड़ देते थे लेकिन वर्ष 2020 में पहले खराब फार्म और अब कोविड-19 महामारी के कारण भारतीय कप्तान का इंतजार लंबा खिंच गया है। कोहली ने इस साल टेस्ट, एकदिवसीय और टी-20 में कुल मिलाकर 16 पारियां खेली हैं जिनमें उनका टॉप स्कोर 89 रन रहा है जो उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बेंगलुरू में 19 जनवरी को एकदिवसीय मैच में बनाया था. यही नहीं 2010 के बाद कोहली के करियर में यह पहला अवसर होगा जबकि वह साल के पहले दो महीनों में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सैकड़ा नहीं जमा पाए।

कोहली वर्ष 2020 में अब तक घरेलू सरजमीं पर श्रीलंका के खिलाफ तीन टी20 और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन वनडे खेले हैं जबकि न्यूजीलैंड दौरे में उन्होंने चार टी20, तीन वनडे और दो टेस्ट मैच खेले. इन मैचों की 16 पारियों में वह 30.46 की औसत से 457 रन ही बना पाए हैं जिनमें तीन अर्धशतक शामिल हैं। उम्मीद थी कि कोहली आईपीएल से पहले दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन वनडे में अपनी फार्म दिखाएंगे लेकिन इस श्रृंखला का धर्मशाला में पहला मैच बारिश की भेंट चढ़ गया जबकि बाकी दो मैच कोविड-19 के प्रकोप के कारण रद्द कर दिये गये। यह श्रृंखला बाद में खेली जाएगी लेकिन इसका आयोजन इस महामारी की स्थिति पर निर्भर करेगी जिसके कारण दुनियाभर की खेल प्रतियोगिताएं प्रभावित हुई हैं। आईसीसी के भविष्य के दौरा कार्यक्रम (एफटीपी) के अनुसार भारत को अपनी अगली श्रृंखला श्रीलंका के खिलाफ जून-जुलाई में खेलनी है जिसमें तीन वनडे और इतने ही टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच भी शामिल हैं। भारत अगस्त में जिम्बाब्वे के खिलाफ तीन वनडे की श्रृंखला खेलेगा, जिसके बाद एशिया कप का आयोजन होना लेकिन ये सभी श्रृंखलाएं कोविड-19 की स्थिति पर निर्भर होंगी। पिछले कुछ वर्षों में यह पहला अवसर है जबकि कोहली इतनी अधिक पारियों तक तिहरे अंक में नहीं पहुंच पाए। इस स्टार बल्लेबाज ने अपना पहला शतक 24 दिसंबर 2009 को श्रीलंका के खिलाफ कोलकाता में लगाया था. यह उस कैलेंडर वर्ष में उनकी नौवीं पारी थी. इसके बाद उन्हें केवल 2013 में शतक के लिये आठवीं पारी तक इंतजार करना पड़ा था। कोहली पिछले छह वर्षों में बेहतरीन फार्म में रहे हैं। इस बीच 2014, 2015 और 2017 में तो उन्होंने वर्ष की अपनी पहली अंतरराष्ट्रीय पारी में ही शतक लगाया था जबकि 2016, 2018 और 2019 में उन्हें केवल तीसरी पारी तक इंतजार करना पड़ा था। भारतीय कप्तान ने 2010 से लेकर 2019 तक दस वर्षों में आठ अवसरों पर जनवरी में ही सैकड़े से शुरूआत कर दी थी जबकि दो बार (2011 और 2013) उन्होंने फरवरी तक इंतजार किया।

कोहली के नाम पर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अभी 70 शतक दर्ज हैं. इनमें से आधे से अधिक (36) शतक उन्होंने पिछले चार वर्षों (2016 से 2019 तक) लगाये. इस बीच 2017 और 2018 में उन्होंने 11 सैकड़े जमाए लेकिन वर्ष 2020 में शुरू से ही उनका बल्ला कुंद पड़ा हुआ है। कोहली ने वर्ष 2020 में दो टेस्ट मैचों में केवल 38 रन बनाये हैं जिसमें उनका उच्चतम स्कोर 19 रन रहा. उन्होंने इस साल अब तक जो छह वनडे खेले हैं उनमें से तीन में वह 50 रन के पार पहुंचे लेकिन अर्धशतक को शतक में बदलने में माहिर यह करिश्माई बल्लेबाज वर्ष 2020 में अभी तक ऐसा नहीं कर पाया। कोहली ने छह वनडे में 43.00 की औसत से 258 रन बनाये हैं। टी20 अंतरराष्ट्रीय में उन्होंने सात मैच खेले हैं जिनमें उनके नाम पर 161 रन दर्ज हैं और उनका उच्चतम स्कोर 43 रन है।

हार्दिक पंड्या की वापसी से टीम इंडिया को होगा बड़ा फायदा: सहवाग

■ नई दिल्ली/न्यूज नेटवर्क

पूरी दुनिया में कोरोना का कहर दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा है ऐसे में जहाँ सभी लोग अपने अपने घरों में हैं तो वहीं इस वायरस का असर दुनिया के सभी खेल टूर्नामेंट्स पर भी पड़ा जिसमें क्रिकेट भी शामिल है।

इस दौरान आईपीएल, पीएसएल सभी टूर्नामेंट्स को रद्द कर दिया गया है। हालांकि 15 अप्रैल के बाद ही आईपीएल को लेकर ज्यादा जानकारी मिल पाएगी। ऐसे में क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने क्रिकेट फैंस को एक बड़ी खुशखबरी दी है। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने ये एलान किया है कि अक्टूबर में होने वाले टी20 वर्ल्ड पर इस वायरस का कोई असर नहीं पड़ेगा और ये टूर्नामेंट अपने समयानुसार होने की संभावना है।

ऐसे में इसी को लेकर जब टीम इंडिया के पूर्व ओपनर वीरेंद्र सहवाग से जब ये पूछा गया की वर्ल्ड कप टीम में किन किन खिलाड़ियों को देखते हैं।

सहवाग ने इस दौरान कहा कि टीम इंडिया इस वर्ल्ड कप की सबसे मजबूत टीम है क्योंकि टीम में हार्दिक पंड्या की वापसी हो रही है। हालांकि टूर्नामेंट को कौन सी टीम जीतेगी इसपर कहना तो मुश्किल है लेकिन टीम इंडिया फिलहाल टॉप पर है।

Lic No : 933/ALC-4/LA/FN:1184

INNOVATIVE TECHNO INSTITUTE

INNOVATIVE TECHNO INSTITUTE CONSULTING | DESIGN | TRAINING

ISO CERTIFIED 2015 COMPANY

IELTS • PTE • TOEFL SPOKEN ENGLISH

TOURIST VISA | STUDY VISA | PR

WORK PERMIT | HOLIDAY PACKAGES

CANADA AUSTRALIA USA U.K SINGAPORE EUROPE

9988115054 • 9317776663

REGIONAL OFFICE : S.C.O No. 10, Gopal Nagar, Near Batra Palace, Jal.

HEAD OFFICE : S.C.O No. 21-22, Kuldip Lal Complex, Highway Plaza, GT Road, Adjoining Lovely Professional University, Phagwara.

E-mail : ankush@innovativetechin.com • hr@innovativetechin.com

Website : www.innovativetechin.com • FB/Innovativetechin